4

रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।

शब्दार्थ-

पानी राखिये – पानी (सम्मान, विनम्रता, जल) बनाए रखो

बिनु पानी सब सून – पानी के बिना सब कुछ व्यर्थ हो जाता है

पानी गए न ऊबरै – पानी (सम्मान, विनम्रता, जल) एक बार चला जाए तो वापस नहीं आता

चून – आटा

4

रहीम कहते हैं कि जीवन में “पानी” यानी **मर्यादा, विनम्रता, और मान-सम्मान** को हमेशा बनाए रखना चाहिए। क्योंकि बिना पानी के जैसे सारी चीजें सूखकर बेकार हो जाती हैं, वैसे ही बिना विनम्रता और मर्यादा के मनुष्य भी अपना मूल्य खो देता है।

जिस प्रकार पानी सूख जाने पर **मोती, मनुष्य और चूना** — सभी अपनी **चमक, गुण और उपयोगिता** खो देते हैं, उसी तरह इंसान भी यदि अपना विनम्र और सभ्य स्वभाव खो देता है तो उसकी महत्ता समाप्त हो जाती है।

रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।

शब्दार्थ-

बिपदाहू – विपत्ति (मुसीबत)
भली – अच्छी
थोरे दिन होय – थोड़े समय की
हित अनहित – अच्छे और बुरे, लाभ और हानि
जगत में – संसार में
जानी परत – जानने पर (समझने पर)
सब कोय – सभी लोग

भावार्थ- *अगर विपत्ति (मुसीबत) थोड़े समय की हो, तो वह अच्छी होती है, क्योंकि इससे यह पता चलता है कि हमारे सच्चे दोस्त और शत्रु कौन हैं। मुसीबत में ही लोगों की असली पहचान होती है। अर्थात् मुसीबत के समय में ही सबके बारे में जाना जा सकता है कि संसार में कौन हमारा अच्छा चाहता है और कौन दिखावा करता है।*

6

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।।

शब्दार्थ-

जिह्वा – जीभ

बावरी – बावली, मूर्ख, पागल

कहि गइ – कह गई

सरग पताल – स्वर्ग और नर्क (स्वर्ग और नर्क दोनों ही हो सकते हैं)

आपु – खुद

कहि भीतर रही – भीतर ही कहे रहती है (चुपचाप कहती रहती है)

खात – खाती

कपाल – सिर

6 **भावार्थ-** *हमारी जुबान बहुत विचित्र होती है। यह कुछ भी कह सकती है, जिससे स्वर्ग जैसी खुशी या पाताल जैसी मुसीबत आ सकती है। लेकिन जुबान तो सुरक्षित रहती है, पर इसका बुरा असर हमारे सिर पर (यानी खुद पर) पड़ता है।*

कहने का तात्पर्य यह है कि हमें सोच समझकर बोलना चाहिए, अगर हम सोचते नहीं हैं तो जीभ से कुछ भी शब्द निकल जाते हैं और बाद में पछताना पड़ता है। जीभ तो मुँह के अंदर सुरक्षित रहती है पर बुरा बोलने पर जूते हमारे सर पर ही पड़ते हैं।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।।

शब्दार्थ-

कहि रहीम – रहीम कहते हैं

संपति – धन

सगे – रिश्तेदार

बनत – बनते हैं, बनाना

बहु रीत – कई तरीके

बिपति – विपत्ति, मुसीबत

कसौटी – कसौटी, परखने का तरीका

जे कसे – जो कसते हैं, जो परखते हैं

ते ही – वही

साँचे – असली, सच्चे

मीत – मित्र, दोस्त

7 **भावार्थ-** *धन-संपत्ति के समय बहुत से रिश्तेदार और दोस्त साथ आ जाते हैं और कई तरीके से रिश्ता निभाते हैं। लेकिन सच्चे मित्र वही होते हैं जो कठिन समय में हमारे साथ खड़े रहते हैं, क्योंकि विपत्ति ही असली मित्र की पहचान करवाती है।*

अर्थात् जब हमारे पास बहुत धन होता है तब बहुत से लोग रिश्ता जोड़ना शुरू कर देते हैं। सोना शुद्ध है या ख़राब, इसकी परख कसौटी पर घिसने से ही होती है। इसी प्रकार मुसीबत के समय में जो हर तरह से साथ देता है, वही सच्चा मित्र होता है।